

कौन करेगा ये वादा ?

- लीना मेहेंदळे, भा.प्र.से.

संगीता ऊर्फ रिकू पाटील शिकार हुई - एक बर्बर समाजकी पाशविकता की, निष्क्रीयता की और कायरता की । लेकिन अफसोस, कि इसके साथ अभी भी हमारी आत्मसंतुष्टि और धन्यता नहीं मिट पाई है । किसका खून खौल उठा इस घटना के दौरान ? या इसके बाद तुरंत ? या आज भी ? और हमने क्या किया ?

समाचार पत्रों ने इस दर्दनाक और शर्मनाक घटना का विवरण तत्काल प्रकाशित किया और एक प्रश्नचिन्ह जनता के सामने खड़ा कर दिया, पर उसके बाद ? शायद इस प्रश्नचिन्ह को कायम लोगोंकी निगाह में रखने का प्रयत्न । विधानसभा में प्रायः हर सदस्य ने इस अपराध पर गहरा क्षोभ प्रकट किया । उसके बाद ? चर्चा की दिशा बदलकर यह अधिक महत्वपूर्ण बात बन गई कि इस प्रश्न पर स्थगन प्रस्ताव लाया जाना चाहिये या नहीं, सरकार गिरनी चाहिये या नहीं, मुख्यमंत्री या शिक्षामंत्री को पदत्याग करना चाहिये या नहीं ? कई नागरिकों ने पत्रलेखन या स्तंभलेखन द्वारा अपनी तीव्र प्रतिक्रिया दर्शाई - शायद मैं भी उसी समूह की मात्र एक और सदस्य बन जाऊँ । शिक्षकों ने और मानसशास्त्रियों ने क्या किया ? एक केस स्टडी, कि कैसे इन मौकों पर लोग हतप्रभ और किंकर्तव्य विमूढ़ हो जाते हैं । उल्हासनगर की जनता ने क्या किया ? पुलिस का धिक्कार और तीन चार संदेहपूर्ण व्यक्तियों को पकड़ने में सहायता ।

पुलिस ने क्या किया ? कभी मंथर गति और कभी तेज चाल दिखाई । वह भी किसी प्रयोजनसे नहीं । जिससे जो बन पड़ा उसने उतना ही किया । मसलन रेलवे पुलिससे मृतदेहकी पहचान जल्दी नहीं कराई जाती - सो नहीं कराई गई । कोर्ट के सम्मुख केस जल्दी उपस्थित नहीं कराई जा सकती - सो नहीं कराई जायेगी । क्रूरकर्मा अपराधियों के आरोप की सुनवाई जल्दी नहीं कराई जा सकती, उन्हें सजा जल्दी नहीं दी जा सकती - सो वह बातें भी जल्दी नहीं कराई जायेंगी । पुलिस के कुछ अधिकारी भगोड़े अपराधियोंको ढूँढ निकालने में माहिर हैं, तो उन्हें जल्दी ढूँढा गया । लेकिन उनके रिवाल्वर आये कहाँसे ? वे लायसेंस किसके नाम से थे ? क्या वे रद्द कराये जायेंगे ? या उनसे प्रश्न पूछे जायेंगे ? या उनके विषयमें जनता को कुछ बताया जायगा ? नहीं - क्यों कि पुलिस या प्रशासन के काम करनेका वह तरीका नहीं होता - इसलिये वैसा नहीं किया जायगा ।

इनके अलावा बाकि लोगोंने क्या किया ? शायद कुछ चर्चा - बस । एक हताशा की भावना, एक दीर्घ उच्छवास और एक भविष्यवाणी, कि यह बस अब ऐसे ही चलेगा ।

किंकर्तव्यविमूढता तो हमारे घर भी कुछ देर तक छाई रही । बच्चे दस और बारह वर्ष के हैं । यदा कदा अखबार पढ़ लेते हैं । कभी कुतूहलवश - जो कि कभी ही कभी होता है - और कभी खास लेख के लिये हमारे कहने पर । उन्हें क्या कहा जाय - कि आजका अखबार पढ़ो और पहचान कर लो उस क्रूरतापूर्ण समाजसे ? या उन्हें अज्ञान के सुखमें रखा जाय, ताकि उनके दिमाग को एक गहरे, दुष्ट

असर से बचाया जाये | उन्हें पता लगने दें या नहीं, कि ऐसे बर्बर अपराध आज हो रहे हैं ?

मैं जानना चाहती हूँ कि हमारे जैसे कितने माँ-बाप हैं जिन्होंने इस प्रश्न को झेला है और क्या तय किया ? कितने माँ-बाप हैं जिन्होंने इस दुर्घटना से पहले कभी अपने बच्चोंसे समाज में पनपती गुंडागर्दी, और बर्बरता की चर्चा की है | संगीता की हत्याके पहले क्या कभी हमने अपने आपको यह बताया है कि बर्बरता और अन्याय जहाँ भी दिखे, हमें उसे रोकनेके लिये तत्काल सामने आना है ? क्या कभी अपने बच्चोंको यह बताया है ? क्या उनके स्कूलमें जाकर कभी पूछा है कि उन्हें ऐसे मौके के लिये क्या सिखाया जाता है ?

हमने आप भी यही सीखा और बच्चोंको भी यही सिखाया कि इस समाजमें मनमानी ही सबकुछ है। कुछ बेईमानी कर सकें, कुछ अकड़ दिखायें, कुछ लूट-खसोट करें, तभी हम टिक सकते हैं | दूसरे भी जब ऐसे अनुचित कुकर्म करते हैं तो वह उचित है - इसलिये नहीं कि वह सही है बल्कि इसलिये कि उनके पास अधिक ताकत है, अधिक पैसा है, और यदि वे हमसे भी ज्यादा मनमानी या अत्याचार कर सकते हैं तो बेशक करें - केवल हमपर आँच नहीं आये | हम हर उपायसे उस आँचसे बच सकें | जहाँ अपराध हो रहा है, - या तो हम उसमें शामिल होकर लूटका हिस्सेदार बनें | या फिर हर प्रयत्नसे वहाँसे अलग हट जायें - उंगली तो क्या आँखे भी न उठायें | आँख उठाना तो क्या, एक विचार तक दिमाग में नहीं कौंधे कि कैसे उस अपराध को रोका जा सकता है | यही हम आपभी सीख रहे हैं और बच्चोंको भी सिखा रहे हैं |

और आज संगीता की हत्या के बाद क्या हम कुछ और करने को तैयार हैं ? जो बच्चे इस जघन्य अपराधके मूक और कायर साक्षी बने रहे, उनमेंसे किसके मनमें आक्रोश जागा ? किसने अपने माँ-बाप से पूछा कि उनके इस व्यवहारके लिये कौन जिम्मेदार है ? क्या किसी माँ बाप ने चाहा है कि काश उनका बच्चा कुछ और करता । या हर माँ-बाप ने भगवानको सराहा है कि उनका बच्चा इस शिकारकांड में सुरक्षित बच गया - चाहे अकर्मण्यतासे ही सही ?

क्या मैंने खुद कभी अपने बच्चोंसे कहा है कि वे ऐसे अपराध का -- आगे आकर मुकाबला करें ? क्या मैंने ऐसे मौकेपर मुकाबले के लिये उन्हें तैयार किया है? आज यदि मेरे बच्चोंके स्कूलमें यही बर्बरता घट रही हो तो मैं उनसे किस बर्ताव की अपेक्षा करूँगी ? और संगीता के माता पिता या खासकर उसकी बहन मेरे बच्चोंसे किस बर्ताव की आशा करेंगे ?

क्या हम अभिभावक संगीताके बलिदान की वेदी पर यह वादा कर सकते हैं कि भविष्यकालीन ऐसी हर घटना मे हमारा बच्चा मूक साक्षी नहीं बना रहेगा ? संगीताके प्रति जो अपराध हुआ उसके गुनहगार और सजावार तो हम सभी हैं । लेकिन यदि इस वादे को अपनाकर और पूरा कर हम अपना ऋण चुका सकें तभी हम भविष्यमें शिकार बननेसे बच सकते हैं ।

हम अभिभावक आगे आयें - यह मेरी अपील है । यही एक उपाय है इस अपराधको रोकनेका और प्रायश्चित्त का । हम न केवल अपने अपने घरोंमें, बल्कि इकठ्ठे आकर, समूहमें जुट कर अपने बच्चोंको तैयार कराने में लग जायें । कि उन्हें अन्याय और अपराध के सम्मुख भागना नहीं, लड़ना है । कि उन्हें अपनी

सुख सुविधा जुटानेके लिये अन्याय का सहारा नही लेना है, तथा औरोंका भी रोकना है ।

इस सामूहिक प्रक्रिया में हम क्यों न हरीष के माँ-बाप को भी शामिल करें ? वे अपने बेटे को तो खो ही चुके हैं । साथ ही इस पाशविक, जघन्य अपराध का कलंक भी अपने सर पर लेकर उन्हें जीवन गुजारना है । समाजके क्षोभ का आज उनके पास कोई उत्तर नही है । क्या वे संगीता का ऋण चुकाने की बात सोचेंगे ? क्या वे साहस जुटाकर कह पायेंगे कि उनके बेटेने जो कुछ किया उससे बचनेके लिये और उसका मुकाबला करनेके लिये वे अन्य बच्चोंको तैयार करेंगे । और यदि उन्होंने साहस जुटाया तो क्या समाज उन्हें एक मौका देगा ?

---- XXX-----